Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

4. ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यों की भूमिका तथा सामाजिक व्यवस्था पर उसके दीर्घकालिक प्रभाव का विश्लेषण

उजाला कुमारी
अतिथि प्राध्यापक
इतिहास विभाग
रामकृष्ण महाविद्यालय, मधुबनी
Email- jhaujala49@ gmail.com

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा प्रवर्तित रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं के सर्वांगींण विकास एवं सशक्तिकरण तथा उसके दीर्घकालिक सामाजिक प्रभावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द- महात्मा गाँधी, नारी सशक्तिकरण, ग्रामीण विकास, सामाजिक परिवर्तन, खादी

प्रस्तावना - गाँधीजी ने कहा था, **" जब तक नारी को पुरूष के समान अधिकार प्राप्त नहीं होंगे, विश्व में शांति स्थापित नहीं हो सकती "** (हरिजन 24 फरवरी 1940) । इस विचार को साकार करने हेतु उन्होंनें चरखा , खादी ,ग्रमोद्योग एवं कताई- बुनाई जैसे रचनात्मक कार्यों को महिला सशक्तिकरण का प्रमुख साधन बनाया। गाँधी जी का मानना था कि भारत का उद्धार उसकी महिलाओं के त्याग एवं ज्ञान पर निर्भर करता है। 23 दिसंबर 1936 को अखिल भारतीय महिला सम्मेलन में उनका सन्देश था: **"जब महिला जिसे हम अबला (कमजोर) कहते है सबला (मजबूत) बन जाएगी, तो वे सभी जो असहाय है सर्वशक्तिशाली बन जाएँगे" ।**

पृष्ठभूमि- महिला सशक्तिरण से अभिप्राय महिलाओं के केवल आर्थिक उत्थान से ही नहीं अपितु महिलाओं की सुरक्षा, सामाजिक प्रतिष्ठा , शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसकी भागीदारी आदि से है। क्योंकि अत्यन्त प्राचीन काल से नारी को मातृशक्ति एवं प्रकृति का द्योतक माना जा रहा है। धार्मिक आस्था में विश्वास रखने वाला पुरूष समाज में स्त्री को देवी स्वरूप मानकर पूजा करता है- यथा **माँ काली माँ दुर्गा , माँ लक्ष्मी , माँ सरस्वती।** वैदिक काल से ही सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में महिलाओं का योगदान दृष्टव है। भारत में **अपाला, घोषा, गार्गी , मैत्रेयी , भारती, रानी दुर्गावती , जीजाबाई** जैसे अनेक महिला हस्तियों ने अपने कार्यों , योगदानों , त्याग एवं साहस से अनेकों आदर्श प्रस्तुत किए है।

स्वामी विवेकानन्द ने भी कहा है महिला की स्थिति में सुधार किए बिना विश्व का कल्याण नहीं हो सकता क्योंकि

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

पक्षी के लिए एक पंख के साथ उड़ना मुशिकल है **" देश की तरक्की के लिए सर्वप्रथम हमें भारत की महिलाओं को सशक्त बनाना होगा "।** एक बार जब वह (महिला) कदम उठा लेती है, तो परिवार , गाँव ,एवं राष्ट्र विकास की ओर आगे बढता है। महिला शक्ति की प्रसन्नता ही इस संपूर्ण पृथ्वी की प्रसन्नता है। सम्पूर्ण ज्ञान विकास की विद्यायें इसी नारी की शक्ति से फलती- फूलती है। जगत में प्रत्येक महिला शक्ति स्वरूपा और ज्ञान स्वरूपा जगदम्बा है। इसी से सम्पूर्ण जगत शक्ति सम्पन्न और ज्ञान (विवेक) विज्ञान प्राप्त करता है। मार्कण्डेय ऋषि ने दुर्गा सप्तशती में लिखा है--

" देवि प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतो अखिलस्य ।

प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवी चराचरस्य॥(दुर्गा सप्तशती) स्त्री व पुरूष सामजिक रचना की गाड़ी के दो पहिए हैं जब तक ये दोनों पहिए सहजता , सरलता , समता , समानता के साथ एकाकार होकर आगे नहीं बढ़ सकते तब तक वांछित प्रगति व खरा विकास संभव नहीं है। भारतीय संस्कृति साहित्य के कवियों ने सत्य ही कहा है कि नारी नर की खान है, अर्थात् नर का अस्तित्व नारियों पर ही निर्भर करता है। महिला घर की लक्ष्मी होती है। **" यत्र नार्यस्तु पूज्यते , रमन्ति तत्र देवता । "** अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवताओं का निवास होता है। स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू (प्रबुद्ध चिन्तक) का मत रहा है कि " **नारी के बिना समाज अधूरा है , देव पुरूषों एवं महात्माओं की जननी महिला सबसे ज्यादा सम्मान की अधिकारी है। "** वे आगे कहते हैं कि **यदि जनता में जागृति पैदा करनी है तो सर्वप्रथम महिलाओं में जागृति पैदा करना चाहिए, एक बार जब वे आगे बढ़ती है तो परिवार , समाज व राष्ट्र भी आगे बढ़ जाता है। अगर एक पुरूष शिक्षित होता है तो सिर्फ व्यक्तिगत रूप से परन्तु जब एक महिला सुशिक्षित होती है तो सम्पूर्ण परिवार, समाज व राष्ट्र सुशिक्षित होता है। डॉ० भीमराव अम्बेडकर का मानना था कि किसी भी समुदाय की प्रगति को मापना हो तो वहाँ की महिलओं द्वारा की गई प्रगति की मात्रा को देखना चाहिए।**

महिला सशक्तिकरण का सही अर्थ तभी संभव हो पाएगा, जब सम्मान खोये बगैर वह जिस लक्ष्य को प्राप्त करना चाहती हो, उसकी प्रयास कर सकती है एवं अपने गंतव्य तक पहुँच सकती है। उसकी इच्छा अनिच्छा , सुरक्षा एवं सम्मान को महत्व दी जाय। उसे संचार का हक मिलें , आर्थिक निर्भरता समाप्त करने के पर्याप्त साधन उपलब्ध हों, सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान मिलें, उसे अपनी योग्यता को बढ़ाने का अवसर मिलें, धन सम्पति में हक मिलें , देश की प्रगति तथा देश क गौरव बढ़ाने में सहयोग करने का पूरा अवसर प्राप्त हों।

गाँधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों में महिलाएँ- अपने राजनीतिक गुरू गोपाल कृष्ण गोखले की सलाह पर गाँधी ने भारत में कुछ करने से पूर्व , गांवों का भ्रमण किया एवं वस्तुस्थिति को समझा । गाँधी जी ने समाज के अंतिम छोर पर रहने वाले व्यक्तियों जिसमें महिलाएँ एवं दलित थे , को केन्द्र में रखकर विकास योजना को सामने

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

रखी। गाँधी ने आजादी के समय महिलओं की दयनीय दशा को अन्त:करण से महसूस किया , और उन्हें रचनात्मक कार्यक्रम का अभिन्न व अहम हिस्सा बनाने हेतु अहिंसक रणनीति बनाई थी।

रचनात्मक कार्यक्रम पुस्तक में स्त्रियों की दशा का वर्णन करते हुए महात्मा गाँधीजी ने कहा है **"हिन्दूस्तान की स्त्रियां अंधेरे में डूबी हुई थी। स्त्री जाति की सेवा को मैंने रचनात्मक कार्यक्रम में जगह दी है, क्योंकि स्त्रियों महिलाओं को पुरूषों के बराबरी के दर्जे एवं अधिकार से स्वराज की लड़ाइयों में शामिल करने के लिए जो कुछ करना चाहिए, वह सब करने की अभी काँग्रेस वालों के दिल में नहीं बसी है ।**

अहिंसा की नींव पर रचे गए जीवन की योजना में जितना और जैसा अधिकार पुरूष को अपने भविष्य की रचना का है उतना और वैसा ही अधिकार स्त्री को भी अपना भविष्य तय करने का है। लेकिन अहिंसक समाज की रचना में जो अधिकार मिलते हैं वे किसी न किसी कर्त्तव्य या धर्म पालन से ही प्राप्त होते हैं। सामजिक आचार-व्यवहार के नियम स्त्री और पुरूष दोनों आपस में मिलकर राजी खुशी से तय करें। इन नियमों को तय करने में बाहरी सत्ता /हुकूमत की जरूरत नहीं है। वे अहिंसक उपायों के तौर पर प्रेम व सौहार्द का पथ अपनाने की वकालत करते हैं। पुरूष को स्त्री को अपना संगिनि /साथी मानना चाहिए न कि दासी या गुलाम पुरूष अपने आप को उसका स्वामी मानते हैं।

समाज में रहनेवाली मूक व बधिर रहकर जुल्म सहने को अपनी नियति समझने वाली स्त्री की वस्तुस्थिति को समझते हुए लिखा है कि पुराने जमाने का गुलाम यह नहीं जानता था कि उसे आजाद होना है या कि आजाद भी हो सकता है। औरतों को यह सीख दी जाती है कि वह पुरूषों की दासी है । हमें रचनात्मक दृष्टिकोण से कदम उठाने के लिए वे कार्यनीति पर अपनी विचार व्यक्त करते हैं कि "इसीलिए काँग्रेस का फर्ज है कि वे स्त्रियों को उनकी मौलिक स्थिति का पूर्ण बोध करावें और उन्हें इस तरह की तालीम दें, जिससे वे पुरूषों के साथ बराबरी के दर्जे से हाथ बँटाने के काबिल बने। " **महिला सशक्तिकरण का अर्थ पुरूषों की संप्रभुता पर महिलओं की संप्रभुता कायम करना नहीं है अपितु समता, समानता , प्रेम व अहिंसा के द्वारा प्रकृति के इन दोनों घटकों के मध्य सामंजस्य स्थापित करना है जो निर्माण (जीवन) रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं"।** राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का दृढ़ मत था कि यदि औरतों को काबिलियत को उजागर करने के अवसर प्रदान किए जायें तो वह समाज व राष्ट्र की प्रगति में पूर्णरूपेण योगदान कर सकती है।

ग्रामीण समुदाय जिसमें महिलाएँ जीविकोपार्जन के हर क्षेत्र में बराबरी की भागीदार है तथा घर की जिम्मेदारी के साथ दोहरी भूमिका हँसी –खुशी से निर्वाह करती है। इसलिए स्वच्छ और मजबूत समाज का निर्माण करने, मानवीय मूल्यों की रक्षा करने, महिलाओं की सक्रिय भूमिका प्रस्थापित करने एवं उनका मानवोचित सम्मान सुनिशिचत करने हेतु महिला सशक्तिकरण वर्तमान में नितान्त आवश्यक है।

The Asian Thinker

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

इस प्रकार महिला सशक्तिकरण की यह प्रक्रिया एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें अनेकों मुद्दें शामिल हैं एवं इसका उद्देश्य समाज में परिवर्तन लाना है। सश्क्तिकरण की प्रक्रिया सफलता के लिये सामाजिक जीवन के आर्थिक , सामाजिक एवं राजनीतिक आयामों में एक साथ और एक ही समय परिवर्तन लाना आवशयक है।

महात्मा गाँधी ने महिला सशक्तिकरण हेतु स्त्रियों की सुरक्षा को अत्यन्त महत्व्पूर्ण मुद्दा माना। समाज में स्त्रियों को सुरक्षित वातावरण मिलना चाहिए ताकि वे अपने कार्यों एवं कर्त्तव्यों का निर्वाह स्वतंत्र एवं निर्भर रूप से कर सकें। इसके लिए समाज के पुरूषों में नैतिकता एवं संवेदनशीलता का होना अनिवार्य है। गाँधी का यह दृढ़ विश्वास था कि महिलाओं का सशक्तिकरण तभी संभव है जब वे आत्मनिर्भर होंगी। गाँधी ने खादी एवं स्वदेशी आन्दोलन के माध्यम से महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया। उन्होंने महिलाओं से आग्रह किया कि वे खादी के वस्त्र बनावें एवं इसका प्रचार-प्रसार करें, खादी के साथ उन्होंने महिलाओं को घरेलू उद्योगों से जुड़ने के लिए भी कहा एवं प्रोत्साहित किया ताकि वे अपने परिवार के लिए आर्थिक सम्बल बनें एवं अपना आत्मविश्वास भी बढ़ाएँ।

राजकुमारी अमृत कौर के अनुसार भारत में महिलाओं की जागृति में योगदान देने वाली सभी कारकों में से कोई भी अहिंसा के क्षेत्र जितना शक्तिशाली नहीं रहा(सविनय अवज्ञा आन्दोलन)है, जिसे गाँधी ने भारत पर ब्रिटिश आधिपत्य के खिलाफ अपने युद्ध में जीतने की पेश्कश की थी। इसने उन्हें आश्रय गृहों से हजारों की संख्या में बाहर निकाला, बिना किसी हिचकिचाहट के अग्नि परीक्षा की भट्टी का सामना करने के लिए।

गाँधी जी महिलाओं पर गरीबी के प्रभाव से बहुत दु:खी थे, जिसके कारण महिलाओं को कपड़ों जैसी बुनियादी जरूरतों से भी वंचित होना पड़ता था। **चम्पारण (बिहार) सत्याग्रह के दौरान 1917** में एक महिला की वस्त्र फटे-पुराने मैले कुचैले थे, क्योंकि वे विवश थी , उसे साफ नही कर सकती थी, वही एकमात्र साड़ी थी उसके पास, उस महिला के साड़ी माँगने पर गाँधी ने सूत कातना प्रारम्भ कर दिया ताकि देश के प्रत्येक गरीब महिला को कपड़े मिल सके। उन्होंनें खादी के उत्पादन को आर्थिक गतिविधि के रूप में बढ़ावा दिया।

महिलाओं के हित में गाँधी का मुख्य योगदान परिवार और समाज में उनकी व्यक्तिगत गरिमा और स्वायत्तता पर उनके पूर्ण और स्पष्ट आग्रह में निहित है। गाँधी महिलाओं को सुधार के वस्तु के रूप में नहीं देखते थे बल्कि आत्म – जागरूक विषयों के रूप में देखते थे, जो अगर चाहें तो अपने भाग्य का निर्णायक बन सकती है। उन्होंनें कताई एवं नमक आन्दोलन को महिलाओं के लिए स्वराज के लिए राजनीतिक आन्दोलन में शामिल होने हेतु अहिंसक तरीकें के रूप में पेश किया। **जिन महिलाओं ने अन्ध ाविश्वास को त्याग दिया एवं गलत के**

प्रति सचेत हो गई हैं, उन्हें सुधार का रचनात्मक कार्य करना होगा। महिलाओं की मुक्ति ही सम्पूर्ण देश कि मुक्ति है,भारत की मुक्ति है।

गाँधी का मानना था कि महिलांएँ स्वराज को बेहतर तरीके से ला सकती हैं क्योंकि वे **त्याग व अहिंसा की साक्षात् प्रतिमूर्ति होती है।** नमक का निर्माण, शराब का त्याग , विदेशी कपड़ो का बहिष्कार , ये विशेष रूप से ग्रामीण महिलाओं को लाभ प्रदान करेगा। गाँधी के अनुसार अपनी भौतिक ,वित्तीय , बौद्धिक संसाधनों को गरीब ग्रामीण महिलाओं के साझा किए बगैर महिलाओं का सशक्तिकरण असंभव है।

अगर गाँव नष्ट हो गया तो भारत भी नष्ट हो जाएगा। गाँधी के अर्थशास्त्र में ग्रामीण और कुटीर उद्योग शामिल हैं जहाँ हस्तशिल्प , कताई, बुनाई और अन्यान्य काम आय सृजन के स्रोत बने रहते हैं। ग्रामोद्योग को विकसित करने में मदद करना रचानात्मक कार्य में संलग्न होना है। गाँधी के अनुसार इसका मुख्य उद्येश्य लाखों गरीब महिलाओं के जीवन में रोशनी की किरण लाना है ताकि उनके अवकाश के घण्टों का सदुपयोग हो। गाँव की महिलाएँ स्वयं के उपकरण एवं तकनीकि के साथ आत्मनिर्भर बनें। गाँधी ने भारत का निर्माण नीचे से यानि कि समाज व विकास के अन्तिम छोर पर बैठे दलित व महिलाओं (सबसे कुचले व कमजोर वर्ग) से करने की कोशिश की इसीलिए ग्रामीण केन्द्रीयता का पालन किया। (जे॰ एन॰ शर्मा , पेज- ४७)

गाँधी ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर जोर देकर महिलाओं को सशक्त बनाने का प्रयास किया यथा- हाथ से पीसना (चक्की चलाना) साबुन बनाना, नमक बनाना , कागज बनाना, माचिस बनाना, चमड़ा बनाने एवं तेल निकालने में महिलाएँ पुरूषों के साथ कंधे – से कंधे मिलाकर काम करें एवं आत्मनिर्भर बनें। कताई सबसे आसान व सबसे सस्ता एवं अच्छा साधन है। **(यंग इंडिया- 10- 12-1919**) उनका मानना था कि “ **राष्ट्रीय संसाधनों को हाथ से कताई के एक उद्योग पर केन्द्रित किया जाना चाहिए जिसे सभी अपना सकते हैं”। (यंग इंडिया -30-09-1926)** । गाँधी के अनुसार अगर आर्थिक विकास में विकेन्द्रीकृत पैटर्न का पालन करना है तो ग्रामीण शिल्पकला को प्रोत्साहित करना जरूरी है , यह पेशा ग्रामीण महिलाओं द्वारा चलाया जा सकता है, जैसे चरखा चलाना , सूत कातना, बुनाई करना, सिलाई एवं चित्रकला करना आदि।

गाँधीवादी आर्थिक दर्शन में चरखा स्वदेशी का शाश्वत प्रतीक बन गया है। चरखा हर घर के लिए उपयोगी और अपरिहार्य वस्तु है, यह राष्ट्र की समरसता और स्वतंत्रता का प्रतीक है। यह आसानी से कही भी बनायी जा सकती है, उन्होनें कताई को अनिवार्य विषय बनाने की वकालत की जो स्वराज का रहस्य है। उन्होंने कताई में स्त्रियों को विशेष रूप से आने के लिए कहा। चरखा आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने व गरीबी दूर करने का अचूक अस्त्र है ।

The Asian Thinker

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

उनके शब्दों में **" मैं चरखे को हर घर में चूल्हे की तरह जरूरी मानता हूं "। क्योंकि अन्य कोई भी योजना गरीबी की समस्या को कभी हल नहीं कर सकती " (यंग इंडिया – 2- 2- 1921)।** कताई को गाँधीजी ने एक सहायक उद्योग के रूप में देखा। **"चरखा अकाल एवं सूखे के खिलाफ एक पूर्ण बीमा है " (यंग इंडिया 4-8-1921)।**

खादी :- खादी सभी ग्रामोद्योगों का केन्द्र बनकर लाखों असहाय गरीबों में आशा की किरण जगाता है, सम्मानजनक रोजगार प्रदान करता है। महिलाओं को सशक्त एवं स्वालम्बी बनाता है। चरखा अपने आप लाखों गरीब महिलाओं की स्थिति को ऊपर उठाता है। लाखों गरीब ग्रामीण महिलाओं के लिए खादी सच्चा आर्थिक प्रस्ताव है, जब तक कि भारत के प्रत्येक गाँव में 16 वर्ष से अधिक आयु के प्रत्येक सक्षम व्यक्ति ,(पुरूष या महिला) को खेत, कारखानों में काम और पर्याप्त मजदूरी प्रदान करने की बेहतर व्यवस्था नहीं मिल जाता, हमें खादी को पूर्णरूपेण कायम रखना चाहिए। **(हरिजन- 20-06-1936)**

खादी वस्त्र नहीं अपितु एक विचार है, भारत के स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान गाँधी का यह सूत्र वाक्य ग्रामीण आत्मनिर्भरता , विकेन्द्रीत विकास और आर्थिक स्वावलम्बन का प्रतीक बन गया। खादी वृत्ति का अर्थ है, जीवन के जिए जरूरी चीजों की उत्पादन एवं विकेन्द्रीकरण। खादी हिन्दुत्व की समस्त जनता की एकता, आर्थिक स्वतंत्रता एवं समानता का प्रतीक है। गाँधीजी ने खादी को भारत की आत्मनिर्भरता एवं स्वावलम्बन का मुख्य आधार माना था। **खादी श्रम, सादगी , अहिंसा एवं राष्ट्रवाद का मूल तत्व था।** खादी का उत्पादन दुनिया में अब तक का सबसे ग्रामीण उत्पादन कार्यक्रम है, खादी ग्रामीण समुदायों को उनका उचित मेहनताना बिना किसी बिचौलिए के भुगतान करता है। वर्तमान समय में भी खादी का महत्व कायम है। **टिकाऊ विकास, जलवायु परिवर्तन, रोजगार, सृजन एवं ग्रामीण महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण** सहित जैसे वैश्विक चुनौतियों को निपटाने में खादी का उपयोग एवं प्रचार प्रसार अहम भूमिका निभा रहा है।

न्यूयार्क में " **कमीशन ऑफ स्टेट्स ऑफ वीमेन** " महिलाओं की स्थिति पर आयोग के 63वें सत्र के दौरान एक कार्यक्रम " **खादी गोज ग्लोबल** " में ग्रामीण श्रेत्रों में गरीबी उन्मूलन और महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में खादी की भूमिका को अहम माना गया है। ग्रामीण भारत में महिलाओं के आर्थिक सश्क्तिकरण की दिशा में यह खादी का एक अनूठा आर्थिक मॉडल है।

महात्मा गाँधी ने महिला सशक्तिकरण हेतु स्त्रियों की सुरक्षा को अत्यन्त ज्वलन्त मुद्दा माना। समाज में स्त्रियों को सुरक्षित वातावरण मिलना चाहिए, ताकि वे निर्भय होकर अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सकें। इसके लिए समाज के पुरूषों में नैतिकता एवं संवदेनशीलता को अपरिहार्य माना। **महिलाओं को सिर्फ घरेलू कार्यों एवं परिवार तक ही सीमित नही रखना चाहिए, अपितु उसे हर क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करना चाहिए,**

The Asian Thinker

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

शिक्षा, रोजगार, व्यवसाय , नौकरी, राजनीति आदि क्षेत्र। जब तक समाज में महिलाओं को उचित सम्मान, अधिकार एवं सुरक्षा प्राप्त नहीं होगी, समाज का विकास अधूरा रहेगा।

आजाद गुलाब सिंह (2012) ने अपने अध्ययन क्षेत्र में **महिला सशक्तिकरण एक अध्ययन:**में सक्षमता ,सामर्थ्यवान , संपन्नता सबलता एवं सुयोग्यता जैसे घटकों की कसौटी के आधार पर महिला सशक्तिकरण को देखते हैं कि महिलाएं तकनीकि ज्ञान-विज्ञान व आध्यात्म के सामंजस्यपूर्ण रूप इनपुट से शारीरिक,मानसिक , संज्ञानात्मक रूप से इतनी सक्षम व कुशल बनें कि अपनी भूमिका का निर्वाह बेहत्तर तरीकें से कर सकें। महिलाएं इतनी सामर्थ्यवान बनें कि वे अन्याय का मुँहतोड़ जवाब दे सकें ताकि उनकी स्त्रियोचित गरिमा पर कभी आँच न आने पाए। महिलाओं को शैक्षिणक विकास व आजीविका निर्वाह के अवसरों में चयन की स्वतंत्रता , अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हो ताकि वे स्वयं को अपनी मर्यादा को ध्यान में रखते हुए स्वेच्छा व योग्यता के अनुरूप सम्पन्न बना सकें। महिलाएं इतनी सबल बनें कि वे घर के अन्दर व बाहर अपने निर्णय स्वयं ल सकें। महिलाओं में समाज निर्माण की सहज स्वाभाविक योग्यता का विकास व सकारात्मक ऊर्जा का संचार हो ताकि वे पुन: सामाजिक परिवर्तन की सशक्त वाहक बन सकें।

राष्ट्रीय स्तर पर कर्यान्वित विभिन्न कार्यक्रमों एवं योजनाओं के परिणामस्वरूप आज नारी में जागृति आई है। उन्होंने अपनी अकर्मण्यता त्यागी है। अस्वाभाविक तंद्रा को भी उखाड़ फेंका है। उनका कार्यश्रेत्र भी अब विस्तृत हो रहा है। आज महिलाऐं स्वयं सहायता समूह बनाती हैं। अनपढ़ महिलाओं को पढ़ा रही हैं। समाज में शिक्षा के प्रति लोंगो में अलख जगा रही हैं। घर एवं बाहर दोनों ही क्षेत्रों में महिलाऐं अपनी नई संभावनऐं तलाश रही हैं। नये समीकरण जोड़ रही हैं। महिलाओं में दृढ़ संकल्पना ,एकाग्रता, आत्मचिन्तन ओर कुछ कर दिखाने की ललक से वे उत्साहित हैं। पुरूष प्रधान वाले समाज में नारी अपना अस्तित्व खोज चुकी है। 73 वें संवधिान संशोधन की सफल कहानियां हमें एक आशा का दीप दिखा रही है। महिलाएं पारिवारिक दायित्वों के साथ- साथ सार्वजनिक रूप से भी अपना कर्त्तव्य निभा रही है। शराब को गाँव से अलविदा कर रही है। आपसी झगड़े को आपस में ही निपटाने की चेष्टा कर रही है। ग्राम सभा को सशक्त बना रही है। घर- घर शौचालय बनवाने एवं गरीबी उन्मूलन का प्रयास कर रही है। **स्वयं सहायता समूहों एवं दीदी बैंकों** से महिलाओं को अपनी ताकत से गरीबी को मिटाने का संकल्प जगा रही हैं।

महिला साक्षरता और शिक्षा महिलाओं की शक्ति है । साक्षरता की दृष्टि से भी महिलाओं ने कदम बढ़ायें हैं। शिक्षण संस्थानों में आज उनकी उपस्थिति बढ़ी है। इससे महिलाएं सार्वजनिक क्षेत्र में भी सभी स्तर पर सरकारी और गैर सरकारी नौकरियों में सामान्य पद से उच्च अधिकारिक पदों पर काम करने लगी है। अखिल भारतीय परीक्षाओं में पुरूषों के मुकाबले महिलाओं का प्रदर्शन अच्छा हो रहा है। न्यायिक दृष्टि से भी 20 वी सदी का उत्तरार्द्ध महिला सशक्तिकरण की दिशा में काफी सर्थाक रहा है।

The Asian Thinker

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध में **गुणात्मक अनुसंधान पद्धति** का प्रयोग करते हुए गाँधी के साहित्य , भाषणों एवं रचनात्मक कार्यक्रमों का सूक्ष्मता से विश्लेषण किया गया है। साथ –साथ स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय रहीं कस्तूरबा गाँधी , सरोजिनी नायडू ,राजकुमारी अमृत कौर जैसी प्रमुख महिला नेत्रियों के साक्षात्कारों एव संस्मरणों का अध्ययन किया गया है। **" स्त्री –पुरूष समानता ईश्वर की सृष्टि का नियम है "। (यंग इंडिया 17**-10-1929) **के** गाँधीवादी सिद्धान्त पर आधरित इस शोध से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उनके रचनात्मक कार्यक्रमों ने ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक स्वावलम्बन ,सामाजिक प्रतिष्ठा , एवं राजनैतिक चेतना प्रदान की है।

इन कार्यक्रमों ने महिला को गृह प्रांगण से निकालकर सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भागीदारी का अवसर प्रदान किया । **"ग्राम स्वराज की स्थापना में महिलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सराहनीय है " (हरिजन 10 दिसंबर 1938)** की गाँधीवादी अवधारणा आज भी स्वयं सहायता समूहों एवं महिला सशक्तिकरण की विभिन्न योजनाओं में प्रतिबिम्बित होती है। यह अध्ययन गाँधीवादी विचारधारा एवं कार्यक्रमों की समकालीन प्रसांगिकता को उदघाटित करता है तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनकी उपादेयता को रेखांकित करता है।

संदर्भ ग्रन्थ –

1- हरिजन ------ महात्मा गाँधी
2- यंग इंडिया ------ महात्मा गाँधी
3- स्त्री संघर्ष का इतिहास ------- राधा कुमार
4- महिला सशक्तिकरण एक अध्ययन ------ आजाद गुलाब सिंह
5- The Economy of Mithila ------ Avanindra Kr. Jha
6– Economic Though of M.K Gandhi ----- Mathur . J.S
7- Khadi why and How? -------- Gandhi M.K
8- The Gospel of Swadeshi ------ Gandhi M.K
9 - Gandhi on women ----- Joshi Pushpa (Navajivan Publishing House)
10- Selections from Gandhi --- Bose, Nirmal Kumar (Navajivan Publishing House
11- egyankosh.co.ac.in

The Asian Thinker